International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 4 March-April 2024

देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों में कल्पना और यथार्थ का समन्वय

डॉ.ज्ञानी देवी गुप्ता
अध्यक्ष (हिन्दी विभाग),गुरु काशी विश्वविद्यालय, (तलवंडी साबो बठिण्डा) पंजाब
Corresponding Author:- डॉ.ज्ञानी देवी गुप्ता
DOI- 10.5281/zenodo.11071894

भूमिका:

हिन्दी में तिलिस्मी और ऐयारी उपन्यास-साहित्य के जनक बाबू देवकीनन्दन खत्री का जन्म 18 जून 1861 (आषाढ़ कृष्ण 7 सम्वत् 1918) को उनके ननिहाल मुजफरपुर, बिहार में हुआ था। बाबू देवकीनन्दन खत्री के पिता लाला ईश्वर दास के पूर्व मुल्तान और लाहौर (अब पाकिस्तान में है) में बसते-उजड़ते हुए काशी आकर बस गए थे। लाला ईश्वरदास का विवाह मुजफरपुर, बिहार के रईस बाबू जीवनलाल मेहता की बेटी गोविन्दी के साथ हुआ था, और वे घर जमाई के रूप में अपने ससुर के यहाँ मुजफरपुर में ही रहने लगे।

बीज शब्द : तिलिस्मी, ऐयारी, कल्पना, नारी, धर्म, दर्शन, समाज, राजनीति, अर्थ, आंदोलन, भूगोल, संवेदनशील, परामर्श

प्रस्तावना:

जब मनुष्य की विचार शक्ति प्रबल हो जाती है। और किसी भी समस्या के समाधान पर वह गहनता से मंथन करने में सक्षम हो जाती है, तो चिन्तन की उस भूमि से कल्पना शक्ति का निर्माण होता है। यहाँ खड़ा होकर व्यक्ति न केवल समस्याओं के समाधान के विषय में सोचता है, अपितु समस्याएं पैदा ही ना हों, ऐसी कल्पनाएं भी करता है। साथ ही अपने जीवन को उन्नत, समृद्ध, सुखी और प्रत्येक प्रकार से सुरक्षित बनाने के गहन विचारों में भी खो जाता है।

समाज केन्द्रित: सदी के पूर्वार्द्ध की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियों का सम्यक विश्लेषण किया जाए।

वर्ण व्यवस्था:

वस्तुतः वर्णभेद, जातिभेद, छुआछूत आदि हमारे समाज की कुछ ऐसी बुराइयाँ हैं, जो समाज की प्रगतिशीलता में बाधक होती है। और उसको पतन की ओर ले जाती हैं। प्रारम्भ में सभ्यता के विकास के साथ इन व्यवस्थाओं का उदय हुआ और 'मनुस्मृति' जैसे ग्रंथों से इनको बल मिला, लेकिन आज के प्रगतिशील और आधुनिक विचारों वाले समाज में भी यह बुराईयाँ किसी-न-किसी रूप में विद्यमान हैं।

संयुक्त परिवार:

हिन्दू समाज-संगठन में संयुक्त परिवार एक महत्वपूर्ण पक्ष है। संयुक्त परिवार में पति-पत्नी के अतिरिक्त नाबालिग बच्चे तथा पितृकुल के चार-पाँच पीढ़ियों के बन्धु-बान्धव तथा असहाय स्त्रियाँ होती हैं। आर्थिक व्यवस्था और सामाजिक रूचि में परिवर्तन के साथ-साथ ही सामाजिक ढांचे में परिवर्तन आना आरम्भ हो जाता है। प्राचीन समय में देश, कृषि कर्म-प्रधान था, पूरे परिवार या कुटुम्ब की आय का मात्र वही साधन था, अतः संयुक्त परिवार प्रणाली उस समय के लिए उपयुक्त थी, और इस प्रकार परिवार के प्रत्येक सदस्य को अपने लिए सोचने व कुछ करने का अवसर मिला एवं समाजगत वे रूढ़ियाँ जो लम्बे समय से चली आ रही थीं, उनमें परिवर्तन होने आरम्भ हुए।

नारी की स्थिति:

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' कह कर जहाँ मनु ने अपने ग्रंथ में नारी को उचित आदर एवं सामाजिक स्थिति देने की बात कही, वहीं "आधुनिक भारतीय उत्थान-काल में समाज-सुधारकों ने अगर किसी समस्या को सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा गम्भीर समस्या के रूप में लिया है, तो वह थी- नारी समस्या। 19वीं शताब्दी के सभी तरह के समाज-सुधारकों के दिमाग में नारी समस्या ही थी।"

धर्म व दर्शन:

भारत में धर्म व समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध माना गया है। धार्मिक मूल्यों और विधानों के आधार पर ही समाज का विनियमन हुआ, अतः सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए धार्मिक विचारों में क्रान्ति आवश्यक थी। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध विद्वान फरकुहर ने भी यही विचार व्यक्त किए हैं- "प्रत्येक देश में सामाजिक सेवा तथा सुधार का धार्मिक विचारों से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, और विशेषतः भारत में यह स्थिति आसानी से देखी जा सकती है।" वस्तुतः धार्मिक चेतना का सम्बन्ध समाज-सुधार सम्बन्धी कार्यों से अनिवार्यतः होता है।

सामाजिक चित्रण:

प्रचलित परम्पराएं और रीति-रिवाज ही राजा-गोपालसिंह को विपत्ति में डाल देते हैं। और लक्ष्मी देवी नामक कन्या के स्थान पर उनके घर में मुन्दर, जो अपने समय की प्रसिद्ध और प्रभावशाली वेश्या थी, मायारानी के नाम से आ बैठती है। गोपालसिंह के ये शब्द, प्रचलित रस्म व रीति-रिवाज के प्रति, उनका आक्रोश ही है- "मेरे साथ तो रस्म और रिवाज ने दगा की। ब्याह से पहिले मैंने उसे देखा ही न था, फिर पहिचानता क्योंकर ?"

राजनैतिक केन्द्रित:

प्रेस की स्थापना होने के कारण भारतीय जन-मानस में नव-जागरण के लिए महत्वपूर्ण साधन के रूप में सामने आयी। साहित्य में नवीनता का सूत्रपात हुआ। पुस्तकें

आर्थिक केन्द्रित:

धीरे-धीरे छोटे जमींदार और मालिक-किसान दोनों के हाथ से जमीन निकलकर उनके हाथों में आने लगी और साहूकार ही बड़े पैमाने पर जमीन के मालिक बड़े जमींदार-जमींदार-वर्गीय बन गये। वे आमतौर पर शहर के रहने वाले थे, जहाँ वे अपना लेन-देन करते थे और उन्होंने लगान वसूली का काम अपने कारिन्दों के सुपुर्द कर दिया। जो इस काम को मशीनों की सी संगदिली और बेरहमी से करते थे।"5 कृषि की अवनति, उद्योग-व्यवसाय के विनाश तथा जमींदारी प्रथा से प्राचीन ग्राम-व्यवस्था ही छिन्न-भिन्न हो गई। भारत की आर्थिक-व्यवस्था को गहरा धक्का लगा। आर्थिक ढाँचे को नया रूप देने के इन आंतरिक प्रयासों के अलावा कुछ बाह्य प्रयास भी किए गए जैसे भारत से कम दाम पर माल प्राप्त करके उसे यूरोप में अधिक मूल्य पर बेचा जाना और भारत में व्यापार पर अधिकाधिक कराधान। आय के साधन बढ़ जाने से इंग्लैण्ड में उद्योग बढ़ने लगे।

विभिन्न सुधार-आन्दोलन:

उक्त विवेचन के बाद तत्कालीन भारत का म्निलिखित चित्र उभरकर सामने आता है-

1. समाज में धार्मिक अंधविश्वास, वर्ण-भेद, जाति-भेद, छुआछूत जैसी- कुरीतियाँ विद्यमान थीं। शिक्षा का प्रचार व महत्व कम था फलतः नारी की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी, संयुक्त परिवार प्रथा थी।

2. धर्म के नाम पर नये-नये सम्प्रदायों का जन्म हो चुका था और वे अपनी गतिविधियों से जनता को त्रस्त किये हुए थे। कर्मकाण्ड का बोल-बाला था। पंडे-पुजारी विभिन्न धार्मिक आडम्बरों से भोली-भाली अनपढ़ जनता को मूर्ख बनाते रहते थे।

3. देश की राजनीतिक व आर्थिक दशाओं में तीव्रता से परिवर्तन हो रहा था। सन् 1857 का जन विद्रोह और सन् 1858 में महारानी विक्टोरिया द्वारा शासन अपने हाथ में लेना उस समय की एक महानतम महत्वपूर्ण घटना थी जिसने भारतीय जीवन के कई पक्षों को स्पर्श किया-

छप कर लोगों को घर बैठे मिलने लगी। उस समय के जन-जीवन में प्रेस की उपयोगिता को श्री रमेश तिवारी इस प्रकार अंकित करते हैं- "जैसे-जैसे भारत में प्रेसों का प्रचार बढ़ा, वैसे-वैसे यहाँ की शिक्षा में भी तेजी आती गई। प्रेसों के साथ ही समाचार पत्रों का प्रचलन हुआ। जो बाद में किसी भी तरह के आन्दोलनों की सफलता के लिए आवश्यक उपादान प्रमाणित हुए। हेंस्टिग्स और लॉर्ड कार्नवालिस के समय में बंगाल और मद्रास में कई प्रेसों की स्थापना हुई। इसी समय विलायती अखबारों का आना भी प्रारम्भ हुआ, जिनसे भारतीय अखबारों को उचित प्रोत्साहन मिला। इस प्रकार पत्रकारिता की कला का भी श्रीगणेश भारतवर्ष में इसी समय हुआ।"

(क) देश में नई सुविधाओं का विस्तार किया गया, किन्तु साथ ही उन पर चारों ओर से आर्थिक दबाव डाले जाने लगे जिससे साधारण व्यक्ति में दासता बोध पैदा हुआ।

(ख) नवीन शिक्षा-नीति बनी। अंग्रेज़ी के प्रचार पर पूरा ध्यान दिया गया। फलतः नए सामाजिक वर्ग बने और भारतीय जीवन में एक नया मोड़ आया। जीवन-शैली ही बदलने लगी।

(ग) रेल, डाक, तार, प्रेस जैसी वैज्ञानिक सुविधाएं भारतीय जीवन का अंग बनीं अतः एक साधारण भारतीय को सोचने और कुछ करने के लिए नई भूमि मिली।

4. आर्थिक दृष्टि से अंग्रेजी शासन में भारत दृढ़ नहीं हो पाया, क्योंकि यहाँ के सभी उद्योग धंधे बंद किए जाने की प्रक्रिया में थे। कृषि की अवनति हो रही थी और प्राचीन ग्राम-व्यवस्था टूट चुकी थी। भारत का धन विदेश जा रहा था, लेकिन समय परिवर्तन हुआ और बाद में यहाँ के औद्योगिक विकास के लिए भी योजनाएं बनी।

5. विदेशी विचारधारा के सम्पर्क में आने से भारतीय जीवन अत्यन्त प्रभावित हुआ और प्रबुद्ध वर्ग के मन में यह आशंका उठ खड़ी हुई कि कहीं भारत का अस्तित्व ही तो नहीं मिट जायेगा ? क्योंकि 'ईसाईयत' का प्रचार पूरे जोर पर था और धर्म-परिवर्तन का कुचक्र भी चल पड़ा था।

अतः इस राजनीतिक संघर्ष, सामाजिक विघटन और आर्थिक पतन के युग में नव-जागृति, नव-चेतना की लहर आई और भारत में तथा यहाँ के जन-जीवन में व्याप्त सभी प्रकार की कुप्रथाओं, कुरीतियों, धार्मिक आडम्बरों को समाप्त करने के लिए विभिन्न सुधार-आन्दोलन आरम्भ किए गए। वस्तुतः ईसाई धर्म के व्यापक प्रचार हो जाने के कारण हिन्दुओं में भी अपनी परम्परागत रूढ़-मान्यताओं के प्रति नवीन दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ और छुआछूत, खान-पान तथा जाति-पाँति के कठोर बन्धन शिथिल पड़ने लगे।"

भौगोलिक केन्द्रित:

खत्री जी ने साहित्य के क्षेत्र अपने अनुभव और अध्ययन के साथ पदार्पण किया था। जंगल की ठेकेदारी के दौरान इन्होंने पर्वत, नदी, वन, खंडहर आदि का गहरा अध्ययन और सूक्ष्म निरीक्षण किया था। अतः जब और जहाँ इनको अपने उपन्यासों में प्रकृति के चित्रण की आवश्यकता हुई, इन्होंने उसी सत्य का चित्रण कर दिया, जिसको कई वर्षों तक स्वयं देखा था, स्मरणशक्ति तो अत्यन्त तीक्ष्ण थी ही। डॉ. बच्चन सिंह 'आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं- "उन्होंने अपने उपन्यासों को विश्वसनीय बनाने की कोशिश भी की है। इस कोशिश का आधार था उनका अपना अनुभव। नौगढ़ में लकड़ी की ठेकेदारी करते समय वे पहाड़ी खोहों, दरियों, खंडडरों का अच्छा अनुभव प्राप्त कर चुके थे। इस अनुभव के आधार पर ही अपने वर्णनों को वे किंचित् विश्वसनीय बना सके हैं।"

पात्र योजना:

किसी भी उपन्यास अथवा कहानी में कथानक के बाद पात्रों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। जो कि मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं, मुख्य पात्र, सहायक पात्र और गौण पात्र। इन्हीं के इर्द-गिर्द पूरा कहानी अथवा उपन्यास घुमता रहता है, परन्तु सहायक एवं गौण पात्रों के माध्यम से लेखक उपन्यास में रोमांच, रहस्य एवं हास्य आदि के भावों को भरता है। पात्रों के सही चरित्र-चित्रण से ही उपन्यास ज्यादा मोहक, प्रभावषाली एवं षिक्षाप्रद हो जाता है।

न्यायप्रिय एवं प्रजावत्सल:

राजा का जीवन केवल अपने लिए ही नहीं होता, बल्कि अपनी प्रजा के लिए उसके अनेक कर्तव्य होते हैं। तिलिस्मी उपन्यासों के संदर्भ में यह प्रश्न अनायास ही उठाया जा सकता है कि- कई प्रतिष्ठित व इतिहासकारों ने इन उपन्यासों को प्राण शून्य और हल्के स्तर की रचनाएं बताया है। "जब ये दोनों भाई घुमने के लिए बाहर निकलते है। तब शहर के मर्द-औरत बल्कि छोटे-छोटे बच्चे भी इनको देखकर खुश होते थे। जिसके मुंह से सुनिये यही आवाज निकलती थी, ईश्वर ने हम लोगों की सुन ली। जो ऐसे राजकुमारों के चरण यहाँ आये और उस खुदगरज नमक-हराम बेईमान का साया हमारे सर से हटा।"

संवेदनशीलता:

न्यायप्रिय और प्रजावत्सल यह चरित्र संवेदनशील भी हैं इसका सर्वोतम उदाहरण हमें 'कुसुम कुमारी' उपन्यास के आरम्भ में ही मिल जाता है। रनबीर सिंह और जसवंत सिंह घोड़ो पर सवार जंगल में जा रहे हैं। तेज धूप में दौड़ते-दौड़ते जितने वे दोनों परेशान और भूखे-प्यासे हैं। उतने ही उनके वे दोनों घोड़े। विश्राम के लिए वे छायादार वृक्ष की तलाश करते हैं। वहाँ पहुंचकर जैसे ही वे घोड़ों से नीचे उतरते है कि -"घोड़े जीभ निकालकर हाँफते हुए जमीन पर गिरकर देखते-देखते बेदम हो जाते हैं।"

उत्साही:

इस वर्ग के पात्र ऐसे हैं। जिन पर अन्य पात्रों की गतिविधियाँ निर्भर करती हैं। या कहा जा सकता है कि- कथानक का गठन निर्भर करता है। यदि राजा अपनी सेना के सामने अपेक्षित उत्साह का प्रदर्शन नहीं करता और शत्रु पर हमला करने के स्थान पर किसी बाग में डेरा डालना अच्छा मानता है, अथवा विभिन्न तिलिस्म घटनाएं नायक या इस के अन्य पात्रों को शिथिल और हतोत्साहित कर देती हैं, तो यह कथानक की गति और गठन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती।

आचार-निष्ठ:

इस प्रकार के पात्रों की विशेषता यह है कि- वे चाहे कहीं भी हों नियमित रूप से पूजा-पाठ, संध्या-पूजन आदि करते हैं। कह सकते हैं कि- लेखक ने इन पात्रों का ईश्वर में अटूट विश्वास दिखाया है। वे लड़ाई पर जाने से पूर्व भी अपने इष्ट को याद करते हैं। और तिलिस्म में फंस जाने पर भी वहाँ संध्या-पूजन आदि के लिए समय निकालते हैं।

स्वाभिमानी:

खत्री जी ने अपने पात्रों की रचना करते समय उनमें स्वाभिमान भी कूट-कूट कर भरा है। वे केवल तिलिस्मी मकानों को ध्वस्त करने और अपनी प्रेमिकाओं के प्रेम में अपने आपको भुला देने वाले चरित्र नहीं हैं, बल्कि जो घटना उनके अभिमान पर चोट करती है। वे उससे निपटने के लिए हर समय तैयार रहते हैं, जैसा 'चन्द्रकांता संतति' में आनंदसिंह के एक मुस्लिम स्त्री द्वारा कैद कर लिए जाने पर होता है। ज्यों ही आनंदसिंह को ज्ञात होता है कि- वे एक विधर्मी महिला की कैद में हैं। जिससे उनका धर्म चला जायेगा। वे उससे विवाह करने की बात पर तो विचार करने से ही इन्कार कर देते हैं उसके यहाँ का भोजन करना भी अधर्म मानते हैं।

सफल एवं आदर्श प्रेमी:

बुद्धिमानी, नीतिज्ञ, वचनबद्धता आदि को भी उनके चरित्र के अनुसार प्रस्तुत किया है। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि- "इन उपन्यासों का जीवन अधिकांशतः रजवाड़ों का जीवन है। तिलिस्म और ऐयारी को यदि छोड़ दिया जाए, तो 'चन्द्रकांता' और 'चन्द्रकांता संतति' के पात्र विशेषतः नायक-नायिका आदर्श पात्र हैं। उनके पात्रों में नैतिकता है, आचार निष्ठा है। तथा चारित्रिक दृढ़ता और स्वामिभक्त ऐयारों की विशेषताएं हैं। कहीं भी हिंसा और रक्तपात नजर नहीं आता, सारे कार्य केवल बौद्धिक युक्तियों के बल पर होते हैं।"

मध्यवर्गीय पात्र:

मध्यवर्गीय पात्रों में दो प्रकार के पात्र हैं। प्रथम वे जो नायक के सहायक हैं, और प्रत्येक विपत्ति में उसके साथ रहते हैं। अर्थात् सत्-पात्र तथा दूसरे वे जो नायक के सामने

एक के बाद दूसरी विपत्ति और विपरीत परिस्थितियाँ उत्पन्न करते चले जाते हैं, अर्थात् असत् पात्र। दोनों ही प्रकार के पात्र अपनी निजी विशेषताओं से युक्त हैं।

स्वामिभक्त:

स्वामिभक्ति इन मध्यवर्गीय सद् पात्रों की सबसे बड़ी विशेषता स्वामिभक्ति है। वे जिसके हैं उसी के रहते हैं, कोई भी इनको अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता। जैसे बद्रीनाथ ऐयार का यह कथन- "कुमार, मेरा जी तो चाहता है कि आपके साथ रहूँ मगर क्या करूँ, नमक हरामी नहीं कर सकता, कोई तो सबब होना चाहिए। अब आज्ञा हो तो विदा होऊं।"

सच्चे परामर्शदाता:

'चन्द्रकांता' में प्रारम्भ से ही तेजसिंह आदि ऐयार अपने स्वामी वीरेन्द्रसिंह को समयानुसार परामर्श देते रहते हैं। और इन पात्रों के सचरित्र का ही परिणाम है कि- सभी व्यक्ति इन पात्रों द्वारा दी गई सलाह का न केवल आदर ही करते हैं। बल्कि उस पर चलते भी हैं। क्योंकि- उपन्यास में सभी राजाओं के साथ ऐयार दिखाए गए हैं। और यह असम्भव नहीं कि- कभी भी कोई राजा किसी ऐयार की चाल में फँस जाए। इसीलिए ये सत् पात्र अपने आश्रयदाता राजाओं को सचेत करते रहते हैं, जैसे तेजसिंह द्वारा प्रयोग किया गया यह सूत्र वाक्य- "आप जल्दी न करें, जल्दी ही सब कामों को बिगाड़ती है।"

नैतिकतावान:

सभी पात्र अपनी मर्यादाओं व सीमाओं में हैं। वे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कहीं भी ऐसा उदाहरण प्रस्तुत नहीं करते, जिसमें उनकी नैतिकता या चरित्र के सम्बन्ध में जरा-सी भी भ्रांति उत्पन्न हो। निम्नलिखित कुछ उदाहरण इस तथ्य की पुष्टि के लिए पर्याप्त होगें- "चपला अपना वेश बदलकर शहर के बाहर बालादेवी के लिए निकलती है। ऊधर तेजसिंह भी किसी कार्यवश विजयगढ़ जा रहे हैं। अचानक जंगल में दोनों मिलते हैं। एक साथ पत्थर की चट्टान पर बैठकर अपनी भविष्य की कार्यनीति पर विस्तार से चर्चा करते हैं। और अपने-अपने रास्ते चले जाते हैं।"

निपुण कलाकार:

मध्यवर्गीय सत् पात्रों की एक अन्य विशेषता यह भी है, कि- वे अपने कार्य में निपुण हैं। उनके कार्य दायित्व अधिकतर अपना वेश बदलकर और अपनी आवाज व भाषा बदलकर दूसरे को भ्रम में डालना है। इसी से उनके कार्य की सिद्धि होती है। यदि वे अपने इस कार्य में निपुण नहीं हैं, तो वह किसी प्रकार भी अपने स्वामी के योग्य सेवक नहीं बन सकते।

खत्री जी द्वारा रचे गए विभिन्न कथानकों में प्रयुक्त संवादों में निम्नलिखित विशेषताएं परिलक्षित होती हैं-

चरित्र प्रकाशन:

किसी व्यक्ति का चरित्र संस्कारों से किस प्रकार प्रभावित होता है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण 'चन्द्रकांता संतति' के प्रारंभ में ही मिलता है। आनन्दसिंह किसी सुदंरी की क़ैद में हैं। और उसके रूप गुण पर मोहित हो जाते हैं। लेकिन ज्यों ही उनको पता लगता है कि- वह स्त्री मुसलमान है, तो कह उठते हैं-

"आनंद- (चौंक कर) हैं ! क्या तुम मुसलमान हो, जो खुदा की कसम खाती हो ?

औरत- (हंसकर) हाँ, क्या मुसलमान बुरे होते हैं ?

आनंदसिंह यह कहकर उठ खड़े हुए- अफसोस् अगर तुम मुसलमान न होती, तो मैं तुम्हें जी जान से प्यार करता, मगर एक औरत के लिए अपना मजहब नहीं बिगाड़ सकता।"

कथा का सहज विकास:

विशालकाय तिलिस्मी कथा के प्रति पाठक के जुड़ाव व आकर्षण को बनाए रखने के लिए घटनाओं का कुशल संयोजन जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है, कथा का सहज गति से विकास। किसी भी स्थान पर कोई भी व्यतिक्रम सम्पूर्ण कथानक के सौन्दर्य को नष्ट कर सकता है। देवकीनन्दन खत्री ने अपने उपन्यासों की कथा को आगे बढ़ाने में स्वयं एक कथावाचक की भूमिका तो निभायी ही है, साथ ही अपने पात्रों को भी वार्तालाप के माध्यम से कथा आगे बढ़ाने का दायित्व सौंपा है। कुछ उदाहरण इस सम्बन्ध में द्रष्टव्य हैं-

"चन्द्रकांता'' उपन्यास में तेजसिंह ऐयार अपना भेष बदल कर महाराज जयसिंह के दरबार में पहुँचते हैं। और क्रूरसिंह के प्रति महाराज का हृदय घृणा और क्रोध से भर देते हैं, कि- क्रूरसिंह बागी होकर एक अन्य राजा की शरण में चला गया है। और शीघ्र ही राज्य पर हमला कराने का प्रयास भी करेगा। तेजसिंह ने कहा- हुजूर मैं क्रूरसिंह का नौकर हूँ। मेरा नाम रामलाल है। महाराज से बागी होकर क्रूरसिंह चुनारगढ़ के राजा के पास चला गया है। मैनें मना किया कि- महाराज का नमक खाकर ऐसा न करना चाहिए। जिस पर मुझे खूब मारा और जो कुछ मेरे पास था छीन लिया।" 17

जिज्ञासा बनाए रखना:

यद्यपि पात्रों के परस्पर वार्तालाप से कथा को सहज गति मिलती है, कई स्थानों पर पूर्वार्द्ध या आगे की कथा भी स्पष्ट हो जाती है। तथापि यह खत्री जी की ही लेखन-कला है कि- वे पाठक की जिज्ञासा को अंत तक बनाए रखते हैं। और उनके इस कार्य में उनके द्वारा रचे गए संवाद भी सहायक रहे हैं:

"दूसरे दिन तेजसिंह अपने साथ वीरेन्द्रसिंह को उस घाटी में ले गए। जहाँ अहमद को कैद किया था। कुमार उस जगह को देखकर बहुत ही खुश हुए और बोले- भई इस जगह को देखकर तो मेरे दिल में बहुत-सी बातें पैदा होती हैं।

तेजसिंह ने कहा- पहिले पहल इस जगह को देखकर मैं तो आपसे भी ज्यादे हैरान हुआ था। मगर गुरु जी ने बहुत कुछ हाल यहाँ का समझाकर मेरी दिल जमई कर दी। जो किसी दूसरे वक्त आपसे कहूँगा।"18 पाठक को एक नया सूत्र मिल गया सोचने के लिए, कि- उस घाटी में ऐसा क्या है ? जो तेजसिंह उपन्यास के पाठक को बताना नहीं चाहता।

हास्य-व्यंग्य:

बाबू देवकीनन्दन खत्री केवल तिलिस्म के ऊँचे-नीचे और टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर ही पाठकों को नहीं दौड़ाते हैं, बल्कि स्थान-स्थान पर हास्य और व्यंग्य का प्रयोग जैसे पाठक को रुककर सांस लेने का अवसर देता है। कथावस्तु में ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। जबकि- उपन्यास को पढ़ने वाला व्यक्ति भी पात्रों के हँसने के साथ हँस उठता है। और पात्रों के व्यंग्यात्मक संवाद उसके मर्म को छू लेते हैं।

इसी प्रकार गंदे वस्त्र पहने, सत्तर वर्षीय वीभत्स वृद्धा का सुदर्शन राजकुमार वीरेन्द्रसिंह से तत्काल विवाह का आग्रह- "बुढी की बात सुनकर सब खुश हो गए।

कुमार ने कहा- अगर ऐसा ही है, तो जल्द बता कि- वह बनकन्या कौन है ? और घड़ी भर में तिलिस्म कैसे टूटेगा।

बुढी- पहिले मेरे इनाम की बात तो कर लीजिए।

कुमार- अगर तेरी बात सच हुई तो जो कहेगी, वही इनाम मिलेगा।

बुढी- तो इसके लिए कसम खाईये।

कुमार- अच्छा क्या इनाम लेगी, पहले यह तो सुन लूं।

बुढी- बस और कुछ नहीं, केवल इतना ही कि- आप मुझसे अभी शादी कर लें। बनकन्या और चन्द्रकांता से तो चाहे जब शादी हो, मगर मुझसे आज ही हो जाए, क्योंकि मैं बहुत दिनों से तुम्हारे में इश्क में फंसी हुई हूँ। बल्कि तुम्हारे मिलने की तरकीब सोचते-सोचते तो बुढ़ी हो चली। आज मौका मिला है कि- तुम मेरे हाथ फंस गए। बस अब देर मत करो। नहीं तो मेरी जवानी निकल जायगी फिर पछताओगे।"

'चन्द्रकांता संतति' में भी स्थान-स्थान पर ऐसे संवाद दिए गए हैं, जिनमें हास्य व व्यंग्य का पुट है।

काव्यमय संवाद:

कथानक में सजीवता लाने के लिए एवं वास्तविकता उत्पन्न करने के लिए लेखक कहीं पात्रों द्वारा कविता के माध्यम से संदेश कहलवाता है। और कहीं छोटे-छोटे सरल और स्वाभाविक संवाद कथा में रोचकता उत्पन्न कर देते हैं:

"काहे को देते हो जान। मेरी बात सुनो दे कान।
यह सब खेल ठगी को मान। लाश देखकर लो पहिचान।"

"उठो देखो भालो खोजो, खोज निकालो।"

निष्कर्ष:

केवल इन कुछेक विशेषताओं को गिनाकर ही खत्री जी की इन महान् रचनाओं का मूल्य नहीं आंका जा सकता। ये रचनाएं तो एक ऐसी नदी के समान हैं, जिसने पाठक-वृन्द को तो तृप्त किया ही है, साथ ही साहित्य के उद्यान को भी सींचा है। जितनी बार भी इन उपन्यासों को पढ़ें, एक नया रंग, एक नई विशेषता सामने आ जाती है। खत्री जी के शिल्प की विशेषताओं के सम्बन्ध में अमृतलाल नागर के निम्नलिखित शब्द उल्लेखनीय हैं- "उनकी ये विशेषताएं आज भी सादर, साभार ग्रहण करने योग्य हैं। अब समय आ गया है। जबकि हमारे रचनात्मक साहित्य को नया और विशाल पाठकवर्ग मिलेगा। यह पाठकवर्ग अंग्रेजी साहित्य के रचना कौशल की बारिकियों से एकदम अपरिचित होगा। उसे सीधे-सादे ढंग से कहानी पढ़ना पसंद आयेगा। तब देवकीनन्दन खत्री का रचना कौशल ही हमारा रहनुमा बनेगा। कोरी कल्पना के फेर में लाखों पाठक छोड़ने वाले एरिस्ट्रोकेट मूर्ख अपनी जमीन पर निकट भविष्य में न टिक सकेंगे। हमारे नये साहित्यिकारों को उस दिन के लिए प्रस्तुत होना है। और किस्सा-गोई की उस परम्परा को समझदारी के साथ आगे बढ़ाना है। जिसमें यह तिलिस्म के भेद अब समयानुसार मानसिक अन्तर्द्वन्द्व के भेद बनकर साहित्य में सामने आ रहे हैं। मनोविश्लेष्णात्मक साहित्य में उपचेतन और अचेतन की भेद भरी विविधताएं ही आज का सबसे बड़ा तिलिस्म है।"

संदर्भ सूची:

1. हिन्दी उपन्यास का सांस्कृतिक अध्ययन, लेखक- रमेष तिवारी, पृ.सं. 101
2. Social Services and reform are so closely in twined with religious thought and effort in every land and specially in India Farquhar & Modern Relic long Movements in India & p 387
3. चन्द्रकांता संतति, दसवां भाग, तीसरा बयान, पृ.सं. 21
4. हिन्दी उपन्यास साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन, लेखक- रमेष तिवारी, पृ.सं. 48
5. मेरी कहानी, पं. जवाहर लाल नेहरू, पंृ. सं. 418
6. हिन्दी उपन्यास का सांस्कृतिक अध्ययन, लेखक- रमेष तिवारी, पृ.सं. 242
7. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लेखक- डॉ. बच्चन सिंह, पृ.सं. 104
8. चन्द्रकांता संतति, दूसरा भाग, पृ.सं. 67

9. कुसुम कुमारी, पृ.सं. 06
10. चन्द्रकांता, पृ.सं. 75-80
11. चन्द्रकांता संतति, पहला भाग, पृ.सं. 28
12. हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास, सं. डॉ. विनय मोहन शर्मा, पृ.सं. 244
13. चन्द्रकांता पृ.सं. 138
14. चन्द्रकांता पृ.सं. 27
15. चन्द्रकांता पृ.सं. 37
16. चन्द्रकांता संतति, पहिला भाग, पृ.सं. 28
17. चन्द्रकांता पृ.सं. 33
18. चन्द्रकांता पृ.सं. 25
19. चन्द्रकांता पृ.सं. 154
20. चन्द्रकांता पृ.सं. 72
21. चन्द्रकांता पृ.सं. 72
22. हिन्दी उपन्यास साहित्य को देवकीनन्दन खत्री की देन- खत्री स्मृति ग्रन्थ, लेखक- अमृत लाल नागर, पृ.सं. 55